NCERT की नई पाठ्यपुस्तक **मल्हार** पर आधारित

संजीव® रिफ्रेशर

हिन्दी

मल्हार

कक्षा-8 के विद्यार्थियों के लिए

लेखक : घनश्याम दास शर्मा

मुख्य विशेषताएँ

1. सभी पाठों का सार
2. सभी पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
3. काव्यांशों/गद्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर
4. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नोत्तर
5. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
6. व्याकरण
7. लेखन
   - अपठित बोध
   - प्रार्थना-पत्र एवं पत्र-लेखन
   - निबन्ध-लेखन
   - अनुच्छेद-लेखन
   - संवाद-लेखन
   - सूचना-लेखन
   - विज्ञापन-लेखन

₹ मूल्य : 300.00

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★★★★★★

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को किसी भी रूप में फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, या किसी अन्य माध्यम से, या किसी सूचना पुर्नप्राप्ति प्रणाली, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया या यांत्रिक में शामिल करना कॉपीराइट का उल्लंघन माना जायेगा।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथम खण्ड—मल्हार

1.	स्वदेश	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'	1
2.	दो गौरैया	भीष्म साहनी	24
3.	एक आशीर्वाद	दुष्यन्त कुमार	52
4.	हरिद्वार	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	71
5.	कबीर के दोहे	कबीर	104
6.	एक टोकरी भर मिट्टी	माधवराव सप्रे	132
7.	मत बाँधो	महादेवी वर्मा	161
8.	नए मेहमान	उदयशंकर भट्ट	186
9.	आदमी का अनुपात	गिरिजा कुमार माथुर	219
10.	तरुण के स्वप्न	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	243

द्वितीय खण्ड—व्याकरण-भाग

1.	भाषा		267
2.	वर्ण-विचार		271
3.	शब्द विचार		276
4.	संज्ञा		280
5.	विकारी शब्दों के विकारक तत्त्व—		284
	(1) लिंग	(284)	
	(2) वचन	(288)	
	(3) कारक	(291)	
6.	सर्वनाम		294
7.	विशेषण		297
8.	क्रिया		301
9.	काल		305
10.	अविकारी (अव्यय) शब्द		308
	(अ) क्रियाविशेषण	(308)	

	(ब) संबंधबोधक अव्यय	(311)	
	(स) समुच्चयबोधक अव्यय	(313)	
	(द) विस्मयादिबोधक अव्यय	(316)	
11.	समास		318
12.	संधि		323
13.	उपसर्ग		330
14.	प्रत्यय		333
15.	शब्द-भण्डार		338
	(i) विलोम शब्द	(338)	
	(ii) पर्यायवाची शब्द	(341)	
	(iii) अनेकार्थी शब्द	(344)	
	(iv) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	(346)	
	(v) पुनरुक्त शब्द	(350)	
	(vi) युग्म शब्द (समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द)	(352)	
16.	वाक्य भेद		356
17.	विराम चिह्न		361
18.	शुद्ध और अशुद्ध शब्द एवं वाक्य		366
19.	मुहावरे		374
20.	लोकोक्तियाँ		381
21.	अलंकार		391

तृतीय खण्ड—रचना-भाग

1.	अपठित गद्यांश-पद्यांश	398
2.	प्रार्थना-पत्र एवं पत्र-लेखन	417
3.	निबन्ध-लेखन	432
4.	अनुच्छेद-लेखन	464
5.	संवाद-लेखन	469
6.	सूचना-लेखन	476
7.	विज्ञापन-लेखन	480

प्रथम खण्ड—मल्हार (कक्षा-8)

1

स्वदेश

—गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

कवि परिचय—'स्वदेश' कविता के रचयिता गयाप्रसाद शुक्ल —'सनेही' हिन्दी के उन कवियों में से हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में कविता लिखना प्रारंभ कर खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवियों में अपना स्थान बनाया। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में 21 अगस्त, 1883 को हुआ। बचपन में उर्दू-फारसी का अध्ययन किया और 1898 में मिडिल स्कूल पास करके अध्यापन कार्य में लग गये। 1921 में असहयोग आंदोलन के कारण त्याग-पत्र दे दिया। उन्होंने स्वयं कहा, ''सरकारी नौकरी के कारण 'सनेही' के अतिरिक्त मुझे दूसरा उपनाम 'त्रिशूल' रखना पड़ा।'' राष्ट्र-प्रेम की कविताओं के साथ-साथ उन्होंने किसान, मजदूर, सामाजिक कुरीतियों आदि विषयों पर प्रभावकारी कविताएँ लिखी हैं। *त्रिशूल तरंग, राष्ट्रीय मंत्र, कृषक क्रंदन* इनकी उल्लेखनीय रचनाओं में से हैं। इनका निधन 20 मई, 1972 को कानपुर जनपद में हुआ।

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(1883-1972)

कविता का सारांश—यह कविता 'स्वदेश' गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' द्वारा रचित है। कविता का मुख्य भाव देश के प्रति प्रेम है। कवि कहते हैं कि वह हृदय पत्थर के समान है जिसमें अपने देश के लिए प्यार नहीं है। कवि उस जीवन को व्यर्थ बताते हैं जिसमें उत्साह नहीं है और जो संसार के साथ मिलकर नहीं चलता। वे कहते हैं कि जिसने साहस छोड़ दिया, वह कभी सफल नहीं हो सकता और जिसने अपनी जाति का उद्धार नहीं किया, उसका स्वयं का भी उद्धार नहीं होगा। कविता में उस धरती के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई है जिसकी मिट्टी में हम बड़े हुए, जिससे हमें अन्न-जल मिला, और जहाँ हमारे माता-पिता व भाई-बंधु हैं। कवि उस व्यक्ति को पृथ्वी पर भार मानता है जो उस देश पर द्रवित नहीं होता, जिस पर ज्ञानी मरते हैं और दुनिया दीवानी है। वे यह भी कहते हैं कि सब कुछ हमारे हाथों में है, हमें तोप या तलवार की आवश्यकता नहीं है। यह कविता राष्ट्र-प्रेम के लिए प्रेरित करती है और एक आह्वान गीत है।

कविता की सप्रसंग व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
जो जीवित जोश जगा न सका,
उस जीवन में कुछ सार नहीं।
जो चल न सका संसार-संग,
उसका होता संसार नहीं।
जिसने साहस को छोड़ दिया,
वह पहुँच सकेगा पार नहीं।

कठिन-शब्दार्थ— **स्वदेश** = अपना देश। **सार** = महत्त्व, निचोड़, मूल्य। **संसार-संग** = संसार के साथ, दुनिया के साथ। **साहस** = हिम्मत, पराक्रम। **पार** = लक्ष्य, किनारा, सफलता।

प्रसंग—यह पंक्तियाँ गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' द्वारा रचित हमारी पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' में दी गई कविता 'स्वदेश' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि उन व्यक्तियों की बात कर रहे हैं जिनमें अपने देश के प्रति प्रेम, उत्साह और साहस का अभाव है। कवि ऐसे व्यक्तियों के जीवन को निरर्थक मानते हैं।

व्याख्या—कवि कहते हैं कि जिस व्यक्ति के हृदय में अपने देश के लिए प्रेम नहीं है, उसका हृदय पत्थर के समान है, यानी वह संवेदनहीन है। ऐसा हृदय मानवीय भावनाओं से रहित होता है। जिस व्यक्ति का जीवन दूसरों में या स्वयं में उत्साह और जोश नहीं जगा पाता, उसके जीवन का कोई महत्त्व नहीं है। जो व्यक्ति समय के साथ या समाज के साथ मिलकर नहीं चलता, वह अकेला रह जाता है और प्रगति नहीं कर पाता। कवि आगे कहते हैं कि जिसने किसी कार्य को करने का साहस त्याग दिया, वह कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि देश प्रेम, उत्साह और साहस के महत्त्व पर जोर देते हैं।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न—

1. कविता के अनुसार, जिस व्यक्ति ने साहस छोड़ दिया, वह क्या नहीं कर पाएगा?
   (अ) जीवन में खुश नहीं रह पाएगा (ब) संसार को नहीं समझ पाएगा
   (स) लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएगा (द) दूसरों की सहायता नहीं कर पाएगा
2. 'संसार-संग' न चलने वाले व्यक्ति का क्या होता है?
   (अ) समाज में सभी उसके होते हैं (ब) संसार उसका होता है
   (स) परिवार उसके साथ होता है (द) वह अकेला रह जाता है।
3. इन पंक्तियों का मुख्य भाव क्या है?
   (अ) देशभक्ति की कमी (ब) जीवन में जोश और साहस का महत्त्व
   (स) सामाजिकता का अभाव (द) उपरोक्त सभी

उत्तर—1. (स), 2. (ब), 3. (द)।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न—

प्रश्न 1. कवि ने हृदय को पत्थर के समान क्यों कहा है?

उत्तर—कवि ने हृदय को पत्थर के समान इसलिए कहा है क्योंकि उसमें अपने देश के प्रति प्रेम का अभाव है।

प्रश्न 2. 'उस जीवन में कुछ सार नहीं' कवि ने यह किसके लिए कहा है?

उत्तर—यह उन लोगों के लिए कहा गया है जो अपने जीवन में जीवित जोश या उत्साह जगाने में असमर्थ हैं।

प्रश्न 3. साहस छोड़ने का क्या परिणाम बताया गया है?

उत्तर—साहस छोड़ने का परिणाम यह बताया गया है कि व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएगा या उसे सफलता नहीं मिलेगी।

प्रश्न 4. दी गई पंक्तियों में से एक संज्ञा और एक विशेषण शब्द चुनकर लिखिए।

उत्तर—संज्ञा—हृदय, **विशेषण**—जीवित।

2. **जिससे न जाति-उद्धार हुआ,**
होगा उसका उद्धार नहीं।
जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं। **(पृष्ठ 1)**

कठिन-शब्दार्थ—जाति-उद्धार = अपनी जाति या समुदाय का उत्थान/कल्याण। **उद्धार** = मुक्ति, कल्याण, भलाई। **भावों** = भावनाओं, संवेदनाओं। **रस-धार** = प्रेम या आनंद की धारा। **हृदय** = दिल। **पत्थर** = पाषाण, शिला। **जीवित** = प्राणवान, सक्रिय।

प्रसंग—यह पंक्तियाँ गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' द्वारा रचित हमारी पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' में दी गई कविता 'स्वदेश' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि उन लोगों को संबोधित करते हैं जिनमें अपनी जाति या समुदाय के प्रति जिम्मेदारी का भाव नहीं है और जिनके दिल में भावनाओं और प्रेम की कमी है।

व्याख्या—कवि कहते हैं कि जिस व्यक्ति से अपनी जाति या समुदाय का भला नहीं हुआ, उसका स्वयं का भी कल्याण नहीं हो पाएगा। अर्थात् व्यक्ति को अपने समाज और समुदाय के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों को समझना चाहिए और अपने समाज के उत्थान में योगदान देना चाहिए। कवि आगे कहते हैं कि वह हृदय, जो भावनाओं से भरा नहीं है और जिसमें प्रेम या आनंद की धारा नहीं बहती, वह हृदय पत्थर के समान निर्जीव और संवेदनहीन है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न—

1. कवि के अनुसार किसका उद्धार नहीं हो सकता?
   (अ) जिसने धन नहीं कमाया (ब) जिसने साहस छोड़ दिया
   (स) जिससे जाति-उद्धार नहीं हुआ (द) जिसने प्रेम नहीं किया
2. 'बहती जिसमें रस-धार नहीं' पंक्ति के अनुसार हृदय में किसकी कमी है?
   (अ) पानी की (ब) उत्साह की
   (स) प्रेम या आनंद की (द) शक्ति की
3. कवि किस हृदय को 'पत्थर' कहता है?
   (अ) जिसमें क्रोध हो (ब) जिसमें दया न हो
   (स) जिसमें स्वदेश का प्यार न हो (द) जिसमें जोश न हो

उत्तर—1. (स), 2. (स), 3. (स)।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न—

प्रश्न 1. जिससे न जाति-उद्धार हुआ, होगा उसका उद्धार नहीं—कवि इस पंक्ति से क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर—कवि इस पंक्ति से यह कहना चाहते हैं कि जो व्यक्ति अपने समुदाय या समाज के कल्याण में योगदान नहीं देता, उसका स्वयं का भी भला या प्रगति संभव नहीं है।

प्रश्न 2. 'जो भरा नहीं है भावों से' कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर—इसका अभिप्राय यह है कि वह हृदय जिसमें प्रेम, करुणा और अन्य मानवीय संवेदनाएँ नहीं हैं, वह अधूरा है।

प्रश्न 3. कवि ने क्यों कहा है कि ऐसा हृदय 'पत्थर है'?

उत्तर—कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि ऐसा हृदय संवेदनहीन और निष्क्रिय होता है, जिसमें देश-प्रेम जैसी महत्त्वपूर्ण भावना का अभाव होता है।

प्रश्न 4. पत्थर शब्द का पर्यायवाची और **प्यार** शब्द का विलोम लिखिए।

उत्तर—**पत्थर** (पर्यायवाची)—पाषाण, शिला।

प्यार (विलोम)—घृणा, नफरत।

3. जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी॥
जिसने कि खजाने खोले हैं,
नव रत्न दिये हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
जिस पर है दुनिया दीवानी॥ (पृष्ठ 2)

कठिन-शब्दार्थ—**उगे बढ़े** = उत्पन्न हुए और बड़े हुए, विकसित हुए। **दाना-पानी** = भोजन और जल, जीविका। **बंधु** = भाई, रिश्तेदार। **राजा-रानी** = शासक, उच्च स्थान पर आसीन व्यक्ति। **खजाने** = कोष, भंडार, बहुमूल्य वस्तुओं का संग्रह। **नव रत्न** = नए और कीमती रत्न/वस्तुएँ। **लासानी** = बेमिसाल, अनुपम, अतुलनीय। **ज्ञानी** = विद्वान। **दीवानी** = मुग्ध, मोहित।

प्रसंग—यह पंक्तियाँ गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' द्वारा रचित हमारी पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' में दी गई कविता 'स्वदेश' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि अपनी मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उसके महत्त्व और गौरव का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या—कवि अपनी मातृभूमि को नमन करते हुए कहते हैं कि यह वही धरती है जिसकी मिट्टी में हम बड़े हुए हैं और जिससे हमें जीवन के लिए आवश्यक अन्न और जल प्राप्त हुआ है। यह वही देश है जहाँ हमारे माता-पिता और भाई-बंधु निवास करते हैं, और जहाँ हम सभी अपनी मातृभूमि के राजा-रानी के समान हैं, अर्थात् हमें इस भूमि पर पूर्ण अधिकार और सम्मान प्राप्त है। कवि आगे कहते हैं कि इस भूमि ने अपने खजाने खोलकर हमें नए और बेमिसाल रत्न दिए हैं, जो इसकी समृद्धि और महत्ता को दर्शाते हैं। अंत में, कवि कहते हैं कि यह वही देश है जिसकी गरिमा और महानता पर बड़े-बड़े ज्ञानी पुरुष भी अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं और जिस पर पूरा संसार मुग्ध है, उसकी दीवानगी में डूबा हुआ है। इन पंक्तियों में देश के प्रति गहरी श्रद्धा, गौरव और प्रेम का भाव निहित है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न—

1. कवि के अनुसार हमें दाना-पानी कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(अ) नदियों से (ब) आसमान से
(स) मातृभूमि की मिट्टी से (द) विदेश से